संस्थापित १८९७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२३ ● अंक ०८ ● २० फरवरी २०१८ माघ शुक्ल पक्ष पंचमी संवत् २०७४ ● दयानन्दाब्द १९३ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३११८

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्म दिवस पर –

गुरुकुल की शिक्षा के द्वारा ही समाज को नई दिशा मिलेगी

– डॉ० धीरज सिंह आर्य, सभा प्रधान

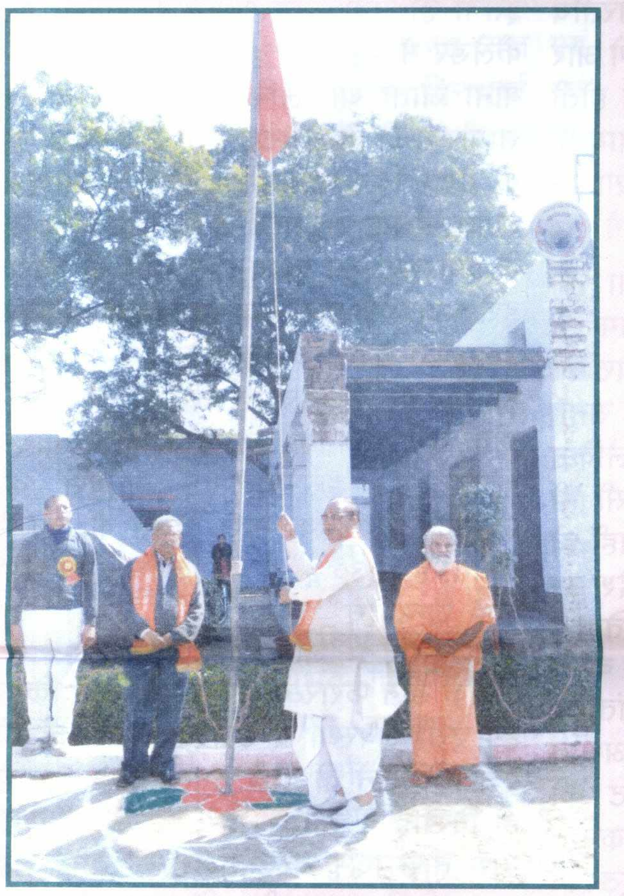

९, १० तथा ११ फरवरी २०१८ को १०८ वां महोत्सव बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया, जिसमें विद्यालय की पूर्व स्नातिका एवं छात्राओं ने भी अपनी उपस्थिति से उत्सव की शोभा को बढ़ाया। प्रातःकालीन यज्ञ का ब्रह्मत्व आचार्य ब्रजेश जी गोवर्धनपुर, अलीगढ़ ने किया।

प्रथम दिवस के मुख्य अतिथि आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० श्री धीरज सिंह जी खुर्जा व श्री सुनील बाजपेयी आयकर आयुक्त, अलीगढ़ तथा विशिष्ट अतिथि आर्यप्रतिनिधि सभा उ०प्र० के मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, मुख्य वक्ता डॉ० श्री राम प्रकाश वर्णी संस्कृत विभागाध्यक्ष एल.आर. डिग्री कॉलेज जसराना, एटा रहे। श्री पंकज आर्य, श्री भूदेव आर्य ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये। सभा की अध्यक्षता श्री के.सी. शर्मा अलीगढ़ ने की।

सभा प्रधान डॉ० धीरज सिंह आर्य जी ने अपने उद्बोधन में नारी शक्ति पर विशेष बल देते हुए कहा कि माता निर्माता भवति यह निर्माण करती है यह सुख को बढ़ाती है यह ऐश्वर्य को बढ़ाती है कभी बेटी बनकर बहन बनकर, वधु बनकर, माता बनकर इतनी सारी विशेषताएं हो ऐसी है ये नारी जिसने भी नारी का तिरस्कार किया वह कभी सुख से न रह पाया मदालसा, गार्गी, मत्रैयी का उदाहरण देते हुए कहा कि नारी का शिक्षित होना बहुत ही अवश्यक है कन्या विद्यालय की प्रसंसा करते हुए कहा कि ये कन्या विद्यालय की छात्रायें ही आगे चलकर समाज को नई दिशा देंगी। जहाँ जिसकी जैसे आवश्यकता है वैसा ही उदाहरण समाज में प्रस्तुत करेंगी यदि अज्ञान का अन्धकार है तो अपनी विद्वता के द्वारा यदि और जहाँ पर देशहित रक्षा की बात आती है वहां झांसी की रानी का उदाहरण देते हुए समर में लड़ने को आगे बढ़ेगी क्योंकि जो शिक्षा गुरुकुल में दी जाती है वह एक प्रकार की अनोखी शिक्षा है, जहां शत्र से लेकर शास्त्र चलाने तक की शिक्षा दी जाती है।

जोकि हर बालिका के अत्मरक्षा के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है और यह केवल ऐसे कन्या गुरुकुलों में ही मिल सकती है। सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी सरस्वती जी ने अपने उद्बोधन में डॉ० पवित्रा वेदालंकार जी की प्रशंसा करते हुए कहा आज संस्कारों की बहुत ही आवश्यकता है। जहाँ पर कालेज में बालक और बालिकाओं को एक साथ शिक्षा के लिए जाते हैं जिनका

पहनावा भी उल्टा सीधा होता है। जिसका परिणाम भुगतान भी पढ़ता है इतना पैसा खर्च होने के बाद भी वे बच्चे एक क्षण में मां बाप को छोड़ देते हैं।

जरा भी माता पिता की परवाह नहीं करते और अपनी दुनिया बसा लेते है। तब माता–पिता को समझ में आता है कि वास्तव में हमने उन्हें संस्कार नहीं दिये।

आज गुरूकुलों को कोई भी सरकारी अनुदान नहीं मिलता लेकिन फिर आर्य समाज में प्रचार–प्रसार की कोई भी कमी नहीं आयी निरन्तर वेद प्रचार में प्रयासरत है। सभा प्रधान डॉ० धीरज सिंह जी आर्य ने तथा सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी दयानन्द जन्मदिवस की

सभी को शुभकामनायें दी। डॉ० धीरज सिंह आर्य ने अपने उद्बोधन में प्रदेश के सभी आर्य समाजों को अपनी शुभकामनायें देते हुए कहा जिन्होंने महर्षि स्वामी जन्मदिवस एवं बोध पर्व मनाया उन सभी को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ। प्रदेश में आर्य समाज के प्रचार के लिए सभी आर्य जन बढ़–चढ़ कर भाग लें। तभी आर्य समाज का प्रचार–प्रसार जन–जन तक पहुंच सकेगा। इस अवसर पर ठा० विक्रम सिंह दिल्ली, सर्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा दिल्ली के सचिव प्रो० विठ्ठलरावजी एवम् स्वामी धर्मबन्धुजी प्रांशला गुजरात भी मुख्य वक्ता रहे। सभा की अध्यक्षता डॉ० देवनारायण भारद्वाज, अलीगढ़ ने की। महिला सम्मेलन की मुख्य अतिथि अपर जिलाधिकारी, हाथरस श्रीमती रेखा चौहान व विशिष्ट अतिथि डॉ० हिमानी पत्नी पुलिस अधीक्षक, हाथरस, सी.ओ.सिटी श्रीमती सुमन कन्नौजिया नहीं रहीं। डॉ० शशिप्रभा त्यागी प्रचार्या ए.के.पी.जी. गर्ल्स कॉलेज, खुर्जा, श्रीमती राकेश संस्कृत केन्द्रीय विद्यालय, भोपाल व श्रीमती प्रवीण विद्यालंकार ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

बेनजीर के नक्शे-कदम-पर बिलावल

बिलावल लोकतन्त्र और समाजिक न्याय को लेकर काफी संजीदा दिख रहे हैं। वह अपनी मां बेनजीर भुट्टो की तरह नारे लगाते हैं जम्हूरियत सबसे अच्छा बदला है बिलावल की जड़े काफी मजबूत दिखाई देती हैं। उनमें यह झलक उनके व्यवहार में साफ देखने को मिलती है। वह बहुत छोटे से थे और उनकी आंखों में आंसू टपक रहे थे। उस वक्त उनकी मां बेनजीर भुट्टो पाकिस्तान की युवा प्रधानमंत्री थी। दरअसल हुआ यह था कि कारों के काफिले के नीचे दबकर उनके पिल्ले की मौत हो गयी थी जो शायद इनमें से किसी एक कार के नीचे सो रहा था। बेनजीर ने अपने बेटे बिलावल के जन्म से सम्बन्धित जानकारी गोपनीय रखी थी, क्योंकि उस समय सैन्य तानाशाह जनरल जियाउल हक चुनाव की घोषणा करने वाले थे। वह चाहते थे ऐसे समय चुनाव हो जब गर्भवती बेनजीर चुनाव में हिस्सा न ले सकें। बिलावल का जन्म २१ सिम्तबर १९८८ को जब हुआ तो जियाउलहक आवाक रह गये।

क्योंकि खुद बेनजीर ने सार्वजनिक रूप से कहा था कि उनका प्रसव दो महीने बाद होना है। मां की मौत के बाद जब उनके जनाजे को उनके पुस्तैनी कब्रिस्तान ले जाया गया था, तब युवा बिलावल ने जिस विनम्रता के साथ शोकमग्न लोगों का अभिवादन किया था, उससे लोगों की आंखें भी भर आयी थी। अचानक आक्सफोर्ड के क्लास रूम के बाहर उन्होंने खुद को कैमरों के बीच घिरा पाया। अब जबकि पाकिस्तान इस वर्ष गर्मियों में होने वाले आम चुनाव की तरफ बढ़ रहा है। ३० वर्ष के हो रहे बिलावल सिन्ध से चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहे हैं। उन्हें पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी की कमान सौंपी जा चुकी है।

सब की नजरें भुट्टों की इस युवा पर है, जिनका राजनीति में आगाज हो रहा है। उधर पंजाब में एक अन्य युवक की ओर सबकी नजरें हैं, और वे है पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ की पुत्री मरियम। वह भी पहली बार चुनाव लड़ने की तैयारी कर रही हैं। थोड़े दिन पहले बिलावल ने कहा था लोगों को मेरी उम्र और अनुभव के बारे में सवाल करने का वाजिब हक है। मैं सिर्फ यही कह सकता हूँ कि नियति पीपीपी की सीईसी ने साजिस कर मुझसे मेरा युवा छीन लिया। लेकिन मेरी मां की हत्या के बाद जब मैंने देखा की पाकिस्तान किस बदहाली और संकट में है, तो मैं खुद को उससे लड़ने के लिए तैयारी किया। इन दिनों बिलावल चुनाव के लिए अपनी पार्टी को संगठित करने में जुटे हुए हैं। वे नये लोगों को पार्टी की विचार धारा से जोड़ रहे हैं। वह पीपीपी में वैसा ही जोश भरना चाहते हैं जैसा कि जुल्फिकार अली भुट्टो के समय हुआ करता था।

यह देखना काफी दिलचस्प होगा कि बिलावल भुट्टो पीपीपी को कामयाबी की किस मंजिल तक ले जा पाते हैं, और संसद के भीतर उनका प्रर्दशन कैसा रहता है। पीपीपी को किस तरह आगे ले जाया जाय। इस बात को लेकर आसिफ अली जरदारी और बिलावल के बीच मतभेद रहे हैं।

जरदारी चाहते थे कि पारम्परिक तरीके से राजनीति की जाय, जबकि बिलावल का मानना है कि बदलाव का समय आ गया है। वास्तव में कुछ खास राजनीतिक मुद्दों पर रूख बदल कर जरदारी ने बिलावल के लिए शर्मिंदगी सी पैदा दी है।

—सम्पादक

अंग्रेजियत की मानसिक गुलामी से उबरें

साकेन्द्र प्रताप वर्मा
भारतीय ग्रामोद्योग,उ०प्र०

१२ अक्टूबर १६३६ को थामस बैबिंगटन मैकाले ने अपने पिता को एक पत्र लिखकर बताया कि यदि उसके द्वारा प्रारम्भ की गई शैक्षणिक नीति चलती रही तो यहाँ (भारत) की सम्मानित जातियों में एक भी मूर्तिपूजक नहीं बचेगा, लेकिन उससे पहले ज्ञान, बुद्धि और विकासशीलता में आये वैचारिक परिवर्तनों का व्यापक प्रभाव दिखाई देने लगेगा। सन् १८५३ में संसदीय समिति के सम्मुख भारत में प्रयोग किये जाने वाले शिक्षा के तौर तरीकों के संदर्भ में राजनीतिक सोच को चार्ल्स ट्रेवेलियन ने भी कुछ इसी रूप में प्रस्तुत करते हुए कहा था कि अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव से भारतीय युवक हमें विदेशी समझना बंद कर देंगे और धीरे-धीरे उनकी हिन्दुस्तानियत कम होती जायेगी तथा अंग्रेजियत बढ़ती जायेगी, जिसके फलस्वरूप वे हमें इस देश से निकालने का कोई भी प्रयास नहीं करेंगे।

मैकाले की इसी मानसिकता का नतीजा है कि आज अंग्रेजी के माध्यम की शिक्षा ही नहीं अपितु अंग्रेजी बोलने पर गर्व की अनुभूति करने वाले भारतीयों का समूह भी अपने देश में देखा जा सकता है। लेकिन अंग्रेजियत के नाले में डूब जाना किसी भी प्रकार की बुद्धिमत्ता का परिचायक नहीं हो सकता। कैसी विचित्र स्थिति है कि देश या दुनिया में लिखी गई अधिकांश इतिहास पुस्तकों में समय काल का उल्लेख करते समय ईसा पूर्व (बी.सी.) या ईसा उपरांत (ए. डी.) शब्दों का प्रयोग किया गया है अर्थात् ईसवीय सन् ही इस सम्पूर्ण सृष्टि की कालगणना को प्रकट करने वाला एकमात्र माध्यम है। वैश्विक स्तर पर इस झूठ को रोकने की हमने भी कोई कोशिश नहीं की। इतना ही नहीं आजादी के बाद अपने देश का नाम तक बदल डाला और देश के संविधान में 'इंडिया, दैट इज भारत' का उल्लेख अंग्रेजों ने हमारे लोगों से बड़ी सावधानीपूर्वक करवा लिया। इसके पीछे भी यही धारणा काम कर रही थी कि भारत को भूल जाओ, इंडिया याद रखो, अंग्रेजों की गुलामी याद रखो, क्यांकि भारत को याद रखने पर भरत याद आयेंगे। शकुंतला और दुष्यंत याद आयेंगे, हस्तिनापुर याद आयेगा, प्राचीन सभ्यता एवं परम्परा ही नहीं अनेक पूर्वज भी याद आयेंगे।

आजादी के बाद भी भारत की इसी सोच ने हमारी वेशभूषा बदल दी, टाई लगाना फैशन हो गया, परिवारों से भारतीयता का लोप होने लगा, पर्व और त्यौहार मनाने के तौर-तरीके बदलने लगे, केक काटकर और मोमबत्ती बुझाकर जन्मदिन का उत्सव मनाना आधुनिकता का परिचायक बन गया।

वास्तव में यह भी केवल अंग्रेजियत के दुष्प्रभाव का ही परिणाम है कि हम अपने जीवनमूल्य और संस्कार गंवाते चले जा रहे हैं। स्वतंत्र भारत की प्रथम सरकार ने नवम्बर १९५२ में पंचांग सुधार समिति का गठन डॉ० मेघनाद साहा की अध्यक्षता में करके भारतीय पंचांगों का अध्ययन करवाया। सात सदस्यीय समिति में १८ फरवरी, १९५३ को अपना प्रतिवेदन अंग्रेजी की, उच्च शिक्षा और अंग्रेजियत के संस्कार प्राप्त पं० जवाहरलाल नहेरू को प्रधानमंत्री होने के नाते प्रस्तुत किया। इस समिति को देश के पंचांग नहीं आये और ग्रेगेरियन (ईसाई) कैलंडर की प्रशंसा करके इसे लागू करने की अनुशंसा कर दी गई, जबकि इस कैलेंडर में न तो कोई वैज्ञानिकता है और न ही ग्रहों-नक्षत्रों की स्थिति का विश्लेषण। इतना ही नहीं, सन् १७५२ ई. से पूर्व इस कैलेंडर में २५ मार्च को वर्ष का प्रथम दिन माना जाता था, लेकिन चर्च और ब्रिटिश साम्राज्य की मिलीभगत से एक जनवरी, वर्ष क. प्रथम दिन घोषित कर दिया गया। ऐसा लगता है कि २५ मार्च के आसपास ही नव विक्रमीसवंत् का प्रथम दिन होने के कारण इसे १ जनवरी कर दिया गया। वैसे तो जिस ईसाइयत में ईसा के जन्मदिन पर ही विवाद हो, वहां का कैलेंडर पूर्ण कैसे हो सकता है? ग्रीक चर्च ७ जनवरी को ईसा का जन्मदिन बताता है। इस्रायल ६ जनवरी को जन्मदिन सामूहिक भोज दिवस के रूप में मनाता है। ५३० ई. से २५ दिसम्बर को ईसा का जन्मदिन कहा जाने लगा। यह रहस्येद्घाटन 'लाइफ ऑफ क्राइस्ट' के लेखक डीन फरार ने अपनी पुस्तक में किया है। ऐसी अवस्था में इस कैलेण्डर को ही प्रशंसा मिलने के पीछे हमारी अंग्रेजी सोच ही दिखाई दे रही है। इस कैलेंडर में कोई मास तीस दिन, कोई इक्त्तीस दिन, कोई अट्ठाईस या उन्नतीस दिन का होता है। प्रतिदिन ६ मिनट ११ सैकेंड का कोई हिसाब नहीं, मासों के दिन निर्धारण में कोई क्रमबद्धता नहीं, इस कैलेंडर में चार माहों की गणना संख्याओं के आधार पर की गई है, जिसमें सितम्बर सातवां, अक्टूबर आठवां, नवम्बर, नवा तथा दिसम्बर दसवां महीना होना चाहिए, लेकिन सितम्बर को नवां अक्टूबर को दसवां, नवम्बर को ग्यारहवां और दिसम्बर को बारहवां मास दर्शाया गया है। ऐसा क्यो?

जूलियस सीजन के नाम पर जुलाई, आगस्टन के नाम पर अगस्त, एटलस की पुत्री के नाम पर मई, मलिका जौन के नाम पर जून मास का निर्धारण करने वाले इस कैलेंडर के द्वारा प्रकृतिक पर्यावरण की कौन-सी परिवर्तनशीलता को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है? फिर भी हम भारत के लोग आजादी की हवा में अंग्रेजियत को ही लादकर घूमने में गर्व की अनुभूति कर रहें हैं। पंचांग समिति ने अपनी रिपोर्ट को न्यायोचित ठहराने के लिए एक ऐसे पंचांग को इस ईसाई कैलेंडर का पिछलग्गू बना दिया जिसे न तो जनता अंगीकृत करती हैर न ही भारत की सरकार। उसे हम शक संवत् पंचांग के नाम से जानते हैं। इस संवत् का प्रारम्भ भी २२ मार्च से माना जाता हैं।

शेष पृष्ठ ४ पर

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का अनुपम उपहार
''मानव निर्माण संस्कार''

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ०प्र०, लखनऊ
संचालक–गुरूकुल पूठ, हापुड़
मो० ९८३७४०२१९२

महर्षि दयानन्द सरस्वती का अनुपम उपहार है हमारे जीवन निर्माण के संस्कार जिनकी संख्या १६ है इस दिशा में किसी महापुरूष का ध्यान नहीं गया और यदि गया होगा तो उसकी विधि और लाभ नहीं बताये। स्वामी जी ने शास्त्रों के प्रमाण धर्मसूत्रों के प्रमाण देकर आयु का निर्देश और करने की विधि को सुन्दर व्यवस्थित करते हुए उसके लाभ भी वर्णित किए हैं स्वामी जी का मानना है कि बालक के जन्म से पूर्व ही उसकी माँ धार्मिक विचारों से युक्त होकर ईश्वरभक्ति यज्ञ एवं स्वाध्याय साधना संयम पूर्वक दिनचर्या का पालन करेगी तो आने वाली पीढ़ी भी धार्मिक आज्ञाकारी और परोपकारी विद्वान तथा बलवान बनेगी। ऐसा स्वामी जी आशीर्वाद के माध्यम से समय–समय पर प्रत्येक संस्कार के अंत में अपनी भावना प्रकट कर रहे हैं। स्वामी जी की इच्छा प्रत्येक नागरिक को श्रेष्ठ विद्वान और बलवान बनाने की थी उन्होंने बच्चे के जन्म होते ही जातकर्म संस्कार लिखा है इसमें बालक का पिता स्नानादि के पश्चात् सोने की सलाई को शहद में भिगोकर बच्चे की जिह्वा पर ओ३म् लिखे और कान में कहे ''वेदोऽसि'' हे पुत्र तू वेद है यह संस्कार बालक के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है आशीर्वाद में परशुभव–हिरण्यास्तृतं भव कहकर पिता बालक को बलवान मूल्यवान बनाना चाहता है बालक अभी बोल नहीं सकता लेकिन सुनकर संस्कार प्राप्त करता है इसी प्रकार नामकरण संस्कार में बालक का पिता नासिका पर अंगुष्ठ एवं अनामिका का स्पर्श करके उसे देखता है और पूछता है कि ''कोऽसि कतमोऽसि'' ४ प्रश्न करता है बालक अभी बोलना नहीं जानता लेकिन ये संस्कार भी सुनने के हैं सुनने से बालक के मन पर पवित्रता एवं सुदृढ़ता आयेगी और वह परिमार्जित हो जायेगा। इस संस्कार में जो आशीर्वाद है स्वामी जी प्रत्येक नागरिक को यही बनाना चाहते हैं हे बालक त्वम् आयुष्मान वर्चस्वी तेजस्वी प्रतापी परोपकारी विद्वान विद्यावान धर्मात्मा यशस्वी पुरूषार्थी श्रीमान् बलवान आज्ञाकारी भूयाः बनो।।

इस प्रकार महर्षि जी की हार्दिक भावना प्रत्येक संस्कार के अंत में आशीर्वाद के रूप में देखी जा सकती है जो सदैव संस्कार विधि में आप देख सकते हैं। उन्होंने विस्तार से प्रत्येक संस्कार को हमारे कल्याणार्थ लिखा है आप पूर्ण श्रद्धा और मनोयोग से पढ़े हम मात्र यह सोच लेते हैं कि संस्कार करना या कराना हमारे पंडित अथवा पुरोहितों का ही तो कार्य है अतः संस्कार विधि को हम क्यों पढ़े? इस धारणा को समाप्त कर प्रत्येक आर्य को अनिवार्य रूप से पढ़ना चाहिए तभी हम भावी पीढ़ी का निर्माण परम्परानुसार कर सकेंगे। प्रत्येक पिता प्रत्येक माता अपनी संतान को गुणवान बनाना तो चाहते हैं लेकिन कैसा वातावरण दिया जाये इसे संस्कार विधि ही बतायेगी। आज इसकी महत्ता और इसलिए बढ़ गयी है कि इस विज्ञान युग में व्हाट्सऐप जैसी बीमारी प्रत्येक युवक युवतियों को प्रभावित कर रही है लड़का हो या लड़की उसी के वशीभूत हो चुका है। उसमें क्या परोसा जा रहा है? आप स्वयं देख सकते हैं किसी भी ट्रेन में, बस में सुविधापूर्वक देख सकते हैं कि कान में लीड लगाकर हाथ में मोबाइल पकड़े हुए क्या सुनते हैं उसमें देखे गये चित्र से आप अनुमान लगा सकते हैं आश्चर्य तो तब अधिक होता है कि जब एक ही फोन को एक–एक कान से लड़का और लड़की साथ साथ सुन रहे होते हैं अब आप स्वयं ही अनुमान लगा सकते हैं कि हमारे बच्चे बलवान ब्रह्मचारी परोपकारी बन सकते हैं? यही हाल रहा तो आने वाले २० वर्षो में युवकों में बीमारियां प्रविष्टि हो जायेंगी और वे युवावस्था में ही वृद्धों जैसे होकर शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होंगे महर्षि दयानन्द जी का स्वप्न अधूरा ही रह जायेगा। अतः प्रत्येक माता पिता को शीघ्र सावधान रहने की आवश्यकता है विचारों की सम्पत्ति सर्वोपरि है वह संस्कारों के माध्यम से प्राप्त होती है अतः संस्कारों का निर्माण जो बाल्यवस्था में हो जाता है वह सारे जीवन हमारी रक्षा करते हैं कवच बनकर सदैव हमारा उपकार करते हैं– ''यन्नवे भाजने लग्नः संस्कारों नान्यथा भवेत्'' जैसे मिट्टी के पात्र को कुम्हार बनाते समय कच्ची मिट्टी में जैसे संस्कार निशान बना देता है पकने के बाद भी वे वैसे ही बने रहते है उसी प्रकार बालक के मन और मस्तिष्क में जैसे संस्कार विचारों के माध्यम से माता पिता गुरूजन देते हैं वही उनकी अमूल्य सम्पदा हो जाती है। महर्षि जी लिखते हैं ''मातृमान् पितृमान आचार्यवान पुरूषोवेद सबसे बड़ा उत्तरदायित्व बालक के निर्माण का माता पर ही रहता है बचपन के क्षण माता के समीप्य में रहकर संस्कार अर्जित होते हैं अतः ''मातृदेवोभव'' कहकर माता का सम्मान बढ़ाया है। मातायें अपने सम्मान को आज सुरक्षित नहीं कर पा रही है पाश्चात्य संस्कृति का दुष्प्रभाव हमें खोखला कर रहा है आज आर्य समाज को इस दिशा में आन्दोलन की तरह एक उत्तम वातावरण खड़ा करने की आवश्यकता है प्रत्येक आर्य अपना उत्तरदायित्व समझकर ऋषि ऋण उतारने के लिए संस्कार विधि पढ़े और उसके अनुसार स्वयं लाभ उठावे फिर उदाहरण बनकर दूसरों को प्रेरणा देते हुए उपकार करे तो मेरे विचार से आज के इस षडयंत्र के विरोध में ही खड़ा होकर युवा पीढ़ी का भविष्य बचाया जा सकता है। इसके लिए प्रत्येक युवा एवं शिक्षाविद को आगे आना होगा। ''नान्यपन्था विद्यतेऽनाय ऽ मनाया'' इसके अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं है आशा है सभी शिक्षा प्रेमी इस विषय पर गंभीरता से चिन्तन करके आने वाली पीढ़ी का कल्याण करने का संकल्प लेंगे।

पिता भी अपने उत्तरदायित्व को समझे जिनके लिए आप दिन रात पुरूषार्थ करके धन कमा रहे हैं उस धन का सदुपयोग क्या हो पायेगा? ''वंशो वैविचारः'' वंश परम्परा मात्र संतान पैदा करने से ही नहीं चलती अपितु पिता की परम्परा संस्कार और विचारों की सुरक्षा से ही चलती है अतः वेद ने भी कहा है ''अनुव्रत पितुः पुत्रो'' पुत्र पिता के संस्कार और विचारों के अनुव्रती होवें जब पिता ही व्रती नहीं है तो अनुव्रती कैसे होंगे? यह आज प्रत्येक परिवार में चिन्ता का विषय बनता जा रहा है ''पितृदेवो भवः'' को कैसे सार्थक करोगे? अतः प्रत्येक पिता अपने कर्तव्य का पालन करेगा तो निश्चित सुपरिणाम अच्छा आयेगा। भारतीय संस्कृति और सभ्यता की भी रक्षा होगी। आज एक धारणा बन गई है कि महंगे स्कूल/कालेजों में अपने बच्चे को प्रवेश मिल गया तो अब हमारा कार्य समाप्त हो गया मात्र अध्यापक ही सारे संस्कार दे देंगे यह मात्र मिथ्या धारणा है। आपकी भूमिका भी महत्वपूर्ण है आपके पास बालक १८ घंटे रहता है और वहां मात्र ६ घंटे ही रहता है, वातावरण आपको बनाना पड़ेगा तब आचार्यों को संस्कार देने में सुविधा होगी '' आचार्य दवोभव'' बाद में आता है, तीनों ही मिलकर संतान का निर्माण करते है, महर्षि जी लिखते हैं कि वह संतान सौभाग्यशाली है जिसकी माता धार्मिक है और पिता चरित्रवान है तथा गुरूजन विद्वान है अतः अपने बच्चों को सौभाग्यशाली बनाने के लिए हमें भी सदैव सावधान रहते हुए उनके शुभ संस्कारों की रक्षा करेंगे तभी हमारे स्वप्न साकार हो सकते हैं। आओ हम सब मिलकर अपने भविष्य अपने बालकों की शिक्षा और संस्कारों के लिए सर्वात्मना समर्पण भाव से जागरूक रहकर सदैव पुरूषार्थी बने तभी हमारी फुलवाड़ी की सुरक्षा होगी। तभी सच्चे अर्थों में हम माता–पिता और गुरू कहलाने के अधिकारी बन सकेंगे। ऐसी सद्बुद्धि परमात्मा हमें प्रदान करें।

वेद कर्तृत्व विचार

सायण और दयानन्द दोनों ने ही प्राचीन वैदिक परम्परा के अनुसार वेदों को अपौरुषेय अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान माना है। ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका के प्रारम्भ में ही दयानन्द ने वेदोत्पत्ति का विषय उठाया उन्होंने वेदों की अन्तः साक्षी से यह सिद्ध किया है कि वेद प्राज्ञान ईश्वर प्रदत्त हैं और सृष्टि के आरम्भ में मनुष्य जाति के हित के लिए यह ऋषियों के अन्तःकरण में ईश्वरीय प्रेरणा से ही प्रकट होता है। यजुर्वेद के पुरुष सूक्त का प्रसिद्ध मन्त्र ''तस्माद्यजुस्तमादजायत्'' उद्यत करते हुये ऋषि दयानन्द ने बतलाया है कि 'यज्ञ' नाम से अभिहित होने वाले सच्चिदानन्दादि लक्षणयुक्त, पूर्ण पुरुष सर्वोपरिपूजनीय परमात्मा से ही ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और द्दाँद नामक अर्थवेद की उत्पत्ति हुई है। शतपथ ब्राह्मण में 'यज्ञ' को विष्णु, बतलाया है, और सर्वत्र व्यापक होने से विष्णु परमात्मा का ही नाम है 'वेवेष्टि व्याप्नोति चराचरं जगत् स विष्णु'। (भूमिका) अतः वेदों की परमात्मा से उत्पत्ति सिद्ध है। इसी प्रसंग में उन्होंने अथर्ववेद का एक अन्य मंत्र भी उद्धत किया है।

यह तो अन्तः साक्ष्य की बात है। वैदिक संहिताओं के अतिरिक्त अन्य ग्रन्थों में भी वेद को मुझ कण्ठ से ईश्वरीय ज्ञान स्वीकार किया है। शत–पथ ब्राह्मण के प्रसिद्ध वचन 'एवं वा अरेडस्य महतो भूतस्य निःश्वसिमेतद्य द्दग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽर्थाङ्गिरसः' को भी महर्षि ने इस प्रसंग में उद्धृत किया है, तत्पश्चात् वे के नित्यत्व को सिद्ध करने के लिए महर्षि ने व्याकरण पूर्व मीमांसा वैशेषिक, न्याय, योग, सांख्य, वेदान्त आदि शास्त्रों के साथ साथ 'सपर्यागाच्छुक्र' आदि यजुर्वेद के मंत्र का प्रमाण भी दिया है तथा युक्ति से भी वेद की नित्यता सिद्ध की है। जो लोग यह शंका करते हैं कि जब ईश्वर निराकार है तो उसने शब्द रूप वेद को कैसे उत्पन्न किया, उनका समाधान करते हुए महर्षि लिखते हैं कि सर्वशक्तिमान् परमात्मा में ऐसी शंका करनी उचित नहीं क्योंकि मुख और प्राण अदि साधनों के बिना भी परमेश्वर में मुख और प्राणादि के काम करने की अनन्त सामर्थ है। अतः निराकार रहते हुये जैसे उसे सृष्टि रचना करने में कठिनाई नहीं होती, उसी प्रकार ज्ञान के प्रकाशक में भी उसका निराकार होना गलत नहीं है। इसी प्रकार की अन्यान्य शंकाओं का भी समाधान इन प्रकरणों में कर दिया गया है विस्तार के लिए ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका के प्रारम्भिक दो प्रकरण वेदोत्पत्ति और वेद नित्यत्व विचार पढ़ने चाहिये।

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि सायण भी इस विषय में महर्षि दयानंद के विचारों से शत प्रतिशत सहमति रखते हैं। अपने ऋग्वेद भाष्य की उप क्रमणिभा में सायण ने वेद के अपौरुषेयत्व का प्रतिपादन करने के लिए पूर्वयज्ञ स्थापित किया है–जैसे रघुवंश आदि ग्रन्थ कालिदास द्वारा रचित है, तथा जैसे वैयासिक भारत, या बाल्मीकीय रामायण 'कहा जाता है वैसे ही काठक, कौथुक, तैत्तिरीय आदि वेद संहितायें पौरुषेय हैं। इस पूर्व पक्ष का समाधान सायण ने अत्यन्त युक्ति ढंग से जैमिनीय सूत्रों को उघृत करते हुए किया है। 'आख्या प्रयचनात्' 'परंतु श्रुति सामान्यमाजम्' आदि मीमांसा सूत्रों के प्रमाण देकर सायण ने यह सिद्ध कर दिया कि वेदों मे जो नाम आते हैं वे व्यक्ति विशेष वाचक नहीं किन्तु उनकी सामान्य संज्ञा है। इसी प्रकार ब्रह्मसूत्रों के शास्त्रयोनित्वात्' अतएव च नित्यत्वम् आदि सूत्रों के प्रमाणों से वेदों का ईश्वर कर्तत्व सिद्ध किया है। यह ही प्रमाण तैत्तिरीय संहिता भाष्य की भूमिका में भी दिये हैं जिनको लिखना पुनरुक्ति मात्र होगी। इसी प्रकार अथर्ववेदभाष्य भूमिका में भी वेद के अपौरुषेयत्व को सिद्ध करने के अन्तर निष्कर्ष रूप में सायण लिखते हैं तस्मद् अपौरुषेयत्वाद् नित्यवाद् विवक्षितार्थत्वाच्च कृत्सास्यापि वेदराशेस्तदन्त तिस्यम ब्रह्मवेदस्यापि विवाक्षितार्थत्वेन

–पं0 भवानीलाल 'भारतीय' एम.ए.

व्याख्येयतासिद्धि।'' इस प्रकार वेद की नित्यता और अपौरुषेयता सिद्ध होती है। इतना ही नहीं, सायणा ने तो अपने गुरू और ईश्वर की स्तुति के रूप में जो द्वयर्थक श्लोक लिखा है उसमें भी वेदों की ईश्वर का विश्वास ही बातया है। वह श्लोक निम्न है।

यस्य विश्वसितं वेदायो वेदेभ्यऽखिलं जगत।
निर्मम तमहं वन्दे विद्यातीर्थ महेश्वरम्।।

उपर्युक्त विवेचन से यह सिद्ध हुआ कि वेद के अपौरुषेयत्व और नित्यत्व के विषय में दयानन्द और सायण के विचार लगभग एक से ही हैं। दोनों ही परम्परागत विचार सरषि का अनुसारण करते हुए वेदों को ईश्वर कृत मानते हैं। परन्तु आश्चर्य की बात तो यह है कि वेद को ईश्वरीय ज्ञान का गौरवमय पद प्रदान करने के अनन्तर भी सायण अपने भाष्य में ऐसी–ऐसी बातें लिख गये हैं जो वेद की नित्यता की बाधक और उसकी उदात्तता और महानता को नष्ट करने वाली हैं। वेद मंत्रों में अनित्य इतिहास ढूँढ़ना और सैकड़ों असम्बद्ध पौराणिक तथा कपोल कल्पित कथाओं को वेद के मत्थे पर मंढ़ देने का दोष सायण को दिया जायगा। दयानंद ने इस विषय में अत्यंत सावधानी बरती है। जिस प्रतिज्ञा को उन्होंने वेदभाष्य के प्रारम्भ में धारण किया था उसेअन्त तक निभाया भी है। यदि वे ऐसा न करते तो उनका कथन परस्पर विरुद्ध होने से वदतोव्याघात दोष से दूषित हो जाता आगे चल कर हम देखेंगे कि किस प्रकार दयानंद का वेद भाष्य इस बात को पूरा करता चलता है परन्तु सायण का वेद भाष्य वह आदर्श उपस्थित नहीं सकता जिसके आधार पर हम कह सकें कि जिन मंत्रों में ऐसी–ऐसी ऊटपटांग बातें, असम्भव और युक्ति विरूद्ध कथायें भरी पड़ी हों वह वेद ईश्वरकृत ही है।

पृष्ठ २ का शेष

अंग्रेजियत की मानसिक....

इस पंचांग में ग्रह नक्षत्रों की गति या प्राकृति परिवर्तनशीलता को आधार नहीं बनाया गया है। समीकरण जन्म लेते ही यह पंचांग भी अपनी मौत मर गया और ईसवी कैलेंडर ही समस्त राजकीय कार्यों का आधार बना दिया गया। परिणाम यह हुआ कि १ जनवरी भारत के लोगों को अपने नववर्ष के रूप में दिखाई देने लगा और हम एक दूसरे को शुभकामनाएं देकर अपने को गौरवान्वित महसूस करने लगे।

कैसा दुर्भाग्य है इसी कैलेंडर की एक अप्रैल को हमने देश की वित्तीय व्यवस्था को संचालित करने वाले वित्तीय वर्ष का प्रथम दिन स्वीकार कर लिया, लेकिन अंग्रेजियत में पले लोगों ने हमें पढ़ा दिया कि पहली अप्रैल मूर्खों का दिन है और हम दौड़ पड़े मूर्ख दिवस मनाने के लिए पहली अप्रैल को अगर हमने किसी को मूर्ख बना लिया तो धन्य हो गये। हमने कभी सोचा नहीं कि मूर्ख तो हम ही बन गये हैं।

अंग्रेजों की पूंछ पकड़कर चलते–चलते हमने यह भी मान लिया कि रात १२ बजे दिन का परिवर्तन होता है, क्योंकि अंग्रेज विद्वानों ने हमें पढ़ाया है। हम शायद भूल गये हैं कि इंग्लैण्ड और भारत में पांच घंटा तीस मिनट के समय का अन्तर होता है। जब इंग्लैण्ड में रात का १२ बजता है तो भारत में प्रातःकाल का पांच बजकर तीस मिनट होता है और हमारी प्राचीन मान्यता है कि प्रातःकाल ही दिवस परिवर्तन सूर्योदय के साथ सम्पन्न होता है।

वस्तुतः अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त लोगों को अंग्रेजों ने नौकरी का ऐसा लालच दिया कि जन्म लेते ही हम अंग्रेजी सिखाने पर जोर देने लगे। आज तो वैश्वीकरण की दौड़ में अंग्रेजी अनिवार्य लगती है। जब हमने ही अपनी भाषा पर गर्व नहीं किया तो दुनियां हमारे साथ क्या चलेगी, किंग जार्ज मेडिकल कॉलेज में किंग जार्ज का नाम हटाने पर अपत्ति करने वालों ने भारत के स्थान पर इंडिया के प्रयोग में अपनी आपत्ति क्यों नहीं दर्ज करायी?

आइये, विचार करें कि क्या ईसा से पूर्व भारत का कोई अस्तित्व या गौरव था या नहीं। इतिहास के पन्ने गवाह हैं कि हम कभी जगत् गुरु थे, ज्ञान–विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में अद्भुत प्रतिभाएं हमारे पास थीं। हमारे इतिहास, साहित्य, जीवन मूल्य तथा जीवन के प्रति दृष्टिकोण में विकृतियां लाने का सतत् प्रयत्न मैकाले के मानस पुत्रों ने विगत १५० वर्षों में किया है। उसी का दुष्परिणाम हैं कि १ जनवरी को हम अपना नववर्ष मनाने की भूल कर रहे हैं। मैकाले द्वारा १७२ वर्ष पूर्व अपने पिता को लिखे गये पत्र की कल्पना को साकार करने में चाहे अनचाहे, जाने–अनजाने सहयोग करने की लगातार गलती कर रहे हैं। आत्मविस्मृति के मार्ग को त्यागकर परकीय दासता के बाद स्वतंत्र राष्ट्जीवन का संचालन करके, आइये हम सब अपनी कालजयी संस्कृति के आधार पर भावी भारत का नवनिर्माण करें अपने ऊपर गर्व करें।

'मृतक शव को गाढ़ने की अपेक्षा उसका दाह संस्कार करना पर्यावरण, रोगों से व कृषि आदि अनेक दृष्टियों से उत्तम है'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

कुछ समय पूर्व एक टीवी चैनल पर शव के अन्तिम संस्कार पर एक बहस हुई थी जिसमें हिन्दू, मुस्लिम व अन्य अनेक प्रतिनिधियों ने भाग लिया और अपने–अपने मत के समर्थन में विचार प्रस्तुत किये। आज भी अधिकांश व सभी ईसाई व मुस्लिम बन्धु अपने शवों का अन्तिम कर्म अपने शवों को भूमि में गाढ़ कर ही करते हैं। शव गाड़ने का विधान भी बाइबिल आदि गन्थों में है। ऋषि दायानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के तेरहवें समुल्लास में ईसाई मत की समीक्षा की है। बाइबिल के तौरेत के उत्पत्ति पर्व २३ की आयत ६ को उन्होंने प्रस्तुत किया है। यह आयत है 'सो आप हमारी समाधि (कब्र) में से चुन के एक में अपने मृतक को गाड़िये जिससे आप अपने मृतक को गाड़े।' अंग्रजी में यह आयत इस प्रकार है **'In the choice of our sepulchers bury thy dead--- But that thou mayest bury the dead (XXIII.6.)'** इसकी समीक्षा करते हुए स्वामी दयानन्द जी ने लिखा है कि मुर्दों के गाड़ने से संसार को बड़ी हानि होती है क्योंकि वह सड़ के वायु को दुर्गन्धमय कर रोग फैला देती है। इसके साथ स्वामी जी ने प्रतिपक्षियों की ओर से स्वयं एक प्रश्न प्रस्तुत किया है कि देखो! जिससे प्रीति हो उसको जलाना अच्छी बात नहीं और गाड़ना जैसा कि उसको सुला देना है इसलिए गाड़ना अच्छा है। इसका समाधान करते हुए स्वामी जी लिखते हैं कि जो मृतक से प्रीति करते हो तो अपने घर में क्यों नहीं रखते? और गाड़ते भी क्यों हो? जिस जीवात्मा से प्रीति थी वह निकल गया, अब दुर्गन्धमय मट्टी से क्या प्रीति? और जो प्रीति करते हो तो उसको पृथ्वी में क्यों गाड़ते हो क्योंकि किसी से कोई कहे कि तुझको भूमि में गाड़ देवें तो वह सुनकर प्रसन्न कभी नहीं होता। उसके मुख आंख और शरीर पर धूल, पत्थर, ईंट, चूना डालना, छाती पर पत्थर रखना कौन सा प्रीति का काम है? दूसरा मुर्दे के लिए कम से कम ६ हाथ लम्बी और ४ हाथ चौड़ी भूमि चाहिए। इसी हिसाब से सौ, हजार व लाख अथवा करोड़ों मनुष्यों के लिए कितनी भूमि व्यर्थ रूक जाती है। न वे खेत, न बगीचा, और न बसने के काम की रहती है। इसलिए सब से बुरा गाड़ना है, उससे कुछ थोड़ा बुरा जल में डालना, क्योंकि उसको जलजन्तु उसी समय चीर फाड़ के खा लेते हैं परन्तु जो हाड़ वा मल जल में रहेगा वह सड़ कर जगत् को दुःखदायक होगा। उससे कुछ एक थोड़ा बुरा जंगल में छोड़ना है क्योंकि उसको मांसाहारी पशु पक्षी नोच खयेंगे तथापि जो उसके हाड़, हाड़ की मज्जा और मल सड़कर जितना दुर्गन्ध करेगा उतना जगत् का अनुपकार होगा, और जो जलाना है वह सर्वोत्तम है क्योंकि उसके सब पदार्थ अणु होकर वायु में उड़ जायेंगे।

(प्रश्न) जलाने से भी दुर्गन्ध होता है। (उत्तर) जो अविधि से जलावें तो थोड़ा सा होता है परन्तु गाड़ने आदि से (जलाने में) बहुत कम होता है। और जो विधिपूर्वक जैसा कि वेद में लिखा है–वेदी मुर्दे के तीन हाथ गहिरी, साढ़े तीन हाथ चौड़ी, पांच हाथ लम्बी, तले में डेढ़ हाथ बीता अर्थात् चढ़ा उतार खोद कर शरीर के बराबर घी उसमें एक सेर में रत्ती भर कस्तूरी, मासा भर केशर डाल न्यून से न्यून आधा मन चन्दन अधिक चाहें जितना ले, अगर–तगर, कपूर आदि और पलाश आदि की लकड़ियों को वेदी में जमा, उस पर मुर्दा रख के पुनः चारों ओर ऊपर वेदी के मुख से एक–एक बीता तक भर के उस घी की आहुति देकर जलाना लिखा है। उस प्रकार से दाह करें तो तो कुछ भी दुर्गन्ध न होगी किन्तु इसी का नाम अन्त्येष्टि, नरमेध, पुरुषमेध यज्ञ है। और जो दरिद्र हो तो बीस सेर से कम घी चिता में न डालें, चाहे वह भीख मांगने वा जाति वालों के देने अथवा राज्य से मिलने से प्राप्त हो परन्तु उसी प्रकार दाह करे। और जो घृतादि किसी प्रकार न मिल सके तथापि गाड़ने आदि से केवल लकड़ी से भी मृतक का जलाना उत्तम है क्योंकि एक विश्वा एक (२० फीट x फीट) भर भूमि में अथवा एक वेदी में लाखों करोड़ो मृतक जल सकते हैं। भूमि भी गाड़ने के समान अधिक नहीं बिगड़ती और कबर के देखने से भय भी होता है। इससे गाड़ना आदि सर्वथा निषिद्ध है।

मतृक के शव का वैदिक रीति से दाह संस्कार करना ही अतीत, वर्तमान में उत्तम रहा है और भविष्य के लिए भी उत्तम है। ऐसा करने से वायु में विकार न होने से रोगों से होने वाले दुःखों से मुक्ति होती है, शव को दफनाने में जो भूमि बेकार होती है, उससे कृषि की हानि होती है, उससे भी लाभ होता है और वायु विकार न होने से हमारा पर्यावरण भी सुरक्षित रहता है। आज के वैज्ञानिक युग में जब कुछ मतों व धर्मों के लोग शव को दफनाने की मध्यकालीन परम्परा का निर्वाह कर रहे हैं तो यह आश्चर्यजनक लगता है। ऐसा करना बुद्धि व ज्ञान सहित मानव हितों व देश हित के विरूद्ध है। विज्ञान के द्वारा कम्प्यूटर, हवाई जहाज, रेलगाड़ी, कार, स्कूटर आदि की खोज हुई तो सभी मतों व धर्मों ने आंख बन्द कर इन्हें अपना लिया, किसी ने अपनी–अपनी परम्पराओं की दुहाई नहीं दी, इसी प्रकार शव का दाह करने में भी सत्य को ग्रहण कर असत्य को छोड़ने का उदाहरण सभी मतों व सम्प्रदायों को देना चाहिये। इससे देश व संसार का हित होगा। ओ३म् शम्।

''मूर्तिपूजा पर ऋषि दयानन्द का अकेले काशी के 40 दिग्गज विद्वानों से सफल शास्त्रार्थ''

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन में जो महान् कार्य किए उनमें से एक काशी के दुर्गाकुण्ड स्थित आनन्द बाग में लगभग ५०–६० हजार लोगों की उपस्थिति में 'मूर्तिपूजा वेदसम्मत नहीं है', विषय पर उनका शास्त्रार्थ भी था जिसमें स्वामी जी विजयी हुए थे। यह शास्त्रार्थ आज से १४८ वर्ष पूर्व १६ नवम्बर, १८५६ को हुआ था। इस शास्त्रार्थ में दर्शकों में दो पादरी भी उपस्थित थे। जिले के अंग्रेज कलेक्टर शास्त्रार्थ का आयोजन रविवार को कराने के इच्छुक थे जिससे वह भी इस शास्त्रार्थ में उपस्थित रह सके। उनमें आने से पण्डित कानून हाथ में लेकर अव्यवस्था व मनमानी नहीं कर सकते थे, अतः काशी नरेश श्री ईश्वरीयप्रसाद नारायण सिंह ने इसे मंगलवार को आयोजित किया था। काशी के सनातनी पौराणिक पण्डितों को यद्यपि इस शास्त्रार्थ में मूर्तिपूजा को वेदसम्मत सिद्ध करना था परन्तु पौराणिकों की वेद में गति न होने और मूर्तिपूजा का वेदों में कही विधान न होने के कारण वह शास्त्रार्थ में वेदों व प्रमाणिक ग्रन्थों का कोई प्रमाण नहीं दे सके थे। वह विषय को बदलते हुए विषयान्तर की बातें करते रहे। यह शास्त्रार्थ सायं ४ से ७ बजे तक लगभग ३ घंटे होने पर शंका वा विश्वास किया हो गया। महाभारत काल के बाद वह पहले व्यक्ति ही थे जिन्होंने मूर्तिपूजा का खण्डन करने के साथ उसे वेद विरूद्ध घोषित किया था। स्वामी शंकराचार्य जी की पुस्तक विवेक चूड़ामणि में भी ईश्वर के सर्वव्यापक व निराकार स्वरूप का वर्णन किया गया है परन्तु उसमें मूर्तिपूजा के वेदसम्मत होने या नहोने पर शंका नहीं की गई है और न किसी को शास्त्रार्थ की चुनौती ही दी गई है। ऋषि दयानन्द को परमात्मा से अति उच्चकोटि की परिमार्जित दिव्य बुद्धि व विवेक प्राप्त हुआ था। उन्होंने न केवल मूर्तिपूजा को अवैदिक घोषित कर उसका खण्डन किया अपितु देश की उन्नति में सर्वाधिक बाधक, देश के पराभव, पराधीनता एवं सभी बुराईयों का कारण मूर्तिपूजा को ही माना है। उनके अनुसार ईश्वर पूजा के स्थान पर मूर्तिपूजा ईश्वर प्राप्ति का साधन नहीं है अपितु न किया जाये और साधक को इष्ट देव का सच्चा स्वरूप व प्राप्ति की विधि ज्ञात न हो तो वह कभी ईश्वर को प्राप्त नहीं कर सकता। यह आश्चर्य की बात है कि भारत में उपासना के लिए योग और सांख्य दर्शन जैसे ग्रन्थ होते हुए काशी के शीर्ष विद्वान भी मूर्तिपूजा का समर्थन करते थे और स्वयं भी ईश्वर के यथार्थ गुणों के आधार पर यमनियम का पालन तथा धारण एवं ध्यान न करते हुए पाषाण व धातुओं की बनी हुई मूर्तियों को धूप व नैवेद्य देकर ईश्वर पूजा की इतिश्री समझते थे। यह उनकी घोर अविद्या थी। आज भी हमारे पौराणिक सनातनी भाई मूर्तिपूजा करते हैं। उनके विवेकहीन अनुयायी भी उनका अनुकरण व अनुसरण करते हुए विधिहीन तरीके से पूजा करके ईश्वर के पास जाने के स्थान पर उससे दूर हो जाते हैं जिसकी हानि उन्हें इस जन्म व भावी जन्मों में उठानी पड़ती है। जो भी मनुष्य मूर्तिपूजा करेगा वह भी इससे होने वाली हानियों को उठायेगा। इसका उल्लेख ऋषि दयानन्द अपने प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में मूर्तिपूजा में सोलह प्रकार के दोषों को सप्रमाण व तर्क के साथ किया है।

मूर्तिपूजा पर स्वामी दयानन्द जी के कुछ विचारों की चर्चा भी कर लेते हैं। उनके अनुसार

शेष पृष्ठ ७ पर

क्या जीव मुक्ति से लौटता है?

– रणधीर शास्त्री, मेरठ

मुक्त जीव परमात्मा के साथ रहाता है और उस परमात्मा के सम्बन्ध से यह मुक्त जीव सब लोकों और सब कामों को प्राप्त होता है। जो परमात्मा को जान के मोक्ष के साधन और अपने को शुद्ध करना जानता है सो यह मुक्ति को प्राप्त जीव शुद्ध दिव्य नेत्र और शुद्ध मन से कमों को देखता प्राप्त होता हुआ रमण करता है। जो ये ब्रह्मलोक अर्थात् दर्शनीय पर आत्मा में स्थिर होकर मुक्ति को प्राप्त करने वाले विद्वान् लोग उपासना करते हैं। उससे उनको सब लोक और सब काम प्राप्त होने हैं अर्थात् जो जो संकल्प करते हैं वह लोक और वह काम प्राप्त होता है और वे मुझ जीव स्थूल शरीर छोड़कर संकल्पमय शरीर से आकाश में परमेश्वर में विचरते हैं। क्योंकि जो शरीर वाले होते हैं वे सांसारिक दुःख से रहित नहीं हो सकते। जैसे इन्द्र से प्रजापति ने कहा है कि परम पूजित धनयुक्त पुरूष! यह स्थूल शरीर मखधर्मा है और जैसे सिंह के मुख में बकरी होवे वैसे वह शरीर मृत्यु के मुख के बीच में है सो शरीर इस मरण और शरीर रहित जीवात्मा का निवास स्थान है। सलिए यह जीव सुख और दुःख से सदा मस्त रहता है क्योंकि शरीर सहित जीव की सांसारिक प्रसन्नता की निवृत्ति होती ही है और जो शरीर रहित मुझ जीवात्मा ब्रह्म में रहता है उसको सांसारिक सुख दुःख का स्पर्श भी नहीं होता किन्तु सदा आनन्द में रहता है।

अब यह प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या मुक्त जीव फिर शरीर धारण करता है? हमारे मत के अनुसार वह शरीर धारण करता है। क्योंकि जिस वस्तु का आदि है उसका अन्त भी होता है। मुक्ति क्योंकि उत्पन्न होती है अतः उसका अन्त भी होना स्वाभाविक है और अन्त होने के बाद शरीर भी धारण करना उसका स्वाभाविक हो जाता है। परन्तु कुछ लोग यह मानते हैं कि जीव मुक्त होने के बाद लौटता नहीं। क्योंकि वे प्रमाण देते हुये कहते हैं कि ''न च पुनरावर्तते न च पुनरावर्तते इति'' (यां प्र८। खं० १५)

अनावृत्तिः शब्दादनावृत्तिः शब्दात्। (शारीरिक रूच ४.४.४३)

यद् गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाय परमं मम। (भगवतगीता)

जहाँ जाकर पुनः लौटा नहीं जाता वह मेरा स्थान है।

यह उपर्युक्त वाक्य जो उपनिषद् गीता और शारीरिक सूत्र में हैं मुक्ति से लौटने के खण्डन में दिए गये हैं। परन्तु उपर्युक्त वचन प्रकरण के अनुसार अर्थ करने पर उनका भाव भिन्न है। मुक्ति से लौटने का वेद में प्रमाण है।

कस्य नूनं कतभस्यामृतानां मनामहे चारू देवस्य नाम। को नो मध्या अदिति ये पुनर्दात् पितरं च इसेषं मातरं च। अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृतानां मनामहे चारू देवस्य नाम। स नो मध्या अदितये पुनर्दात् पितरं च ह्रशेयं मातरं च।२। ऋ०। म०१। सू० २४१/२। इदानीमिव सर्वत्र नात्यन्नोच्छेदः। सख्यिसूत्र १।१५६।

अथार्त् हम लोग किसका नाम पवित्र जानें? कौन नाश रहित पदार्थों के मध्य में वर्तमान देव सदा प्रकाश स्वरूप है जो हमको मुक्ति का सुख भुगाकर पुनः इस संसार में जन्म देता और माता तथा पिता का दर्शन कराता है। हम इस स्वप्रकाश स्वरूप अनादिसदा मुक्त परमात्मा का नाम पवित्र जानें जो हमको मुक्ति में आनन्द भोग कर पृथ्वी में पुनः माता पिता का दर्शन कराता है। वही परमात्मा मुक्ति की व्यवस्था करता और सबका स्वामी है।

मुण्डकोपनिषद् में लिखा है कि– 'ते ब्रह्म लोके ह परान्तकाले परामृतात् परिमुच्यन्ति सर्वे' अर्थात् वे मूक्त जीव मुक्ति में प्राप्त हो के ब्रह्म में आनन्द को तब तक भोग के पुनः महा कल्प के पश्चात् मुक्ति सुख को छोड़ कर संसार में आते हैं। इसकी संख्या स्वामी जी महाराज ने सत्यार्थप्रकाश में लिख है तैंतालीस लाख बीस सहस्र वर्ष की एक चतुर्युजी, दो सहस्र चर्तुयुगियों का एक अद्येरात्र ऐसे तीस अहोरात्रों का एक महीना, ऐसे तीस अहोरात्रों का एक महीना, ऐसे बारह महीनों का एक वर्ष ऐसे शत वर्षों का परान्तकाल होता है। इसको गणित की रीति से यथावत् देखा जा सकता है।

जीव मुक्ति से लौटता है इसमें अन्य भी युक्तियां दी जा सकती हैं–

(१) यदि कोई जीव मुक्त होने के बाद कभी लौटे नहीं तो कोई समय ऐसा भी आ सकता है जब इस संसार में कोई जीव शेष नहीं रहेगा। और यदि यह कहा जाय कि परमेश्वर जितने जीव मुक्त होते हैं उतने उत्पन्न कर देता है तो भी यह दोष अ।एगा कि जीव उत्पत्ति होने से नाश भी होगा और अनित्यता जीव में आ जाएगी।

(२) मुक्ति के स्थान में भी भीड़ भड़का हो जायेगा क्योंकि वहां आगम अधिक और कम कुछ भी नहीं होने से बढ़ती का पारावार न रहेगा। (३) दुःख के अनुभव के बिना सुख कुछ भी नहीं हो सकेगा। कटु न हो तो मधुर क्या और मधुर न हो तो कटु क्या?

(४) मुक्ति को तुम यह कह सकते हो कि यह जन्म और मरण के सदृश है फिर मुक्ति के लिए प्रयत्न क्यों? परन्तु यह बात भी ठीक नहीं क्योंकि ३६००० वार उत्पत्ति और प्रलय का जितना समय होता है उतने समय पर्यन्त जीवों को युक्ति के आनन्द में रहना दुःख का न होना क्या छोटी बात है?

इस प्रकार प्रमाण और युक्तियों दोनों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि जीव मुक्ति से लौटते हैं।

आर्य समाज मुरादाबाद

आर्य समाज रेलवे लाइन मुरादाबाद महर्षि दयानन्द जयन्ती एवं बोधेत्सव बड़े ही हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुए कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में स्वामी धर्मेश्वरा नन्द जी सरस्वती मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश रहे उन्होंने महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि विदेशी राजा कितना अच्छा क्यों न हो लेकिन स्वदेशी राजा ही प्रिय होना चाहिए।

महर्षि ने ही स्वराज्य का सर्वप्रथम नारा दिया था सभा मन्त्री ने सभी आर्य समाजों को अपनी शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर वन्दना आर्या ने मधुर भजन प्रस्तुत किये। कार्यक्रम में श्री सतीश चन्द जी, श्री विरेन्द्र कुमार जी, अरविन्द कुमार जी, श्रीमती वीना देवी, डॉ. राममुनि, आर्य बन्धु, श्री विनोद कुमार, श्री ऋषिपाल, श्री ज्ञानेन्द्र गाँधी जी आदि महानुभाव उपस्थित रहे।

आर्यवीरदल का स्थापना दिवस

दिनांक २६ जनवरी २०१८ को आर्यवीर दल स्थापना दिवस पर आर्यवीरों ने जनता इन्टर कालेज पलड़ी बागपत में अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर सर्वादेशिक के प्रधान सेनापित आर्यवीरदल जी ने ओ३म् ध्वजा रोहण कर इसे शुभारम्भ किया कार्यक्रम का संयोजक आचार्य धर्मवीर शास्त्री जी की प्रतिनिधित्व देखते ही बनता था। प्रधानाचार्य समर सिंह जी, श्री शिवकुमार जी आदि महानुभाव उपस्थित रहें।

शोक समाचार

आर्ष गुरुकुल एटा के उपाचार्य रामदत्त शर्मा जी का अकस्मिक निधन

बड़े ही दुःख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि आर्ष गुरूकुल एटा के उपाचार्य वेदों के प्रकाण्ड विद्वान श्री रामदत्त शर्मा जी का दिनांक १६ फरवरी २०१८ को आकस्मिक निधन हो गया।

अभी एक मास पूर्व ही पत्नी राजरानी शर्मा जी का देहान्त दिनांक १२ जनवरी २०१८ को हुआ था, परिवार एक दुःख से उबर नहीं पाया था कि पिता का साया परिवार से उठ गया श्री रामदत्त शर्मा जी का निधन आर्य जगत की अपूरणीय छति है।

हम आर्य मित्र परिवार परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि परिवारी जनों को यह दुःख सहने की क्षमता प्रदान करें।

नोट : शोक सभा दिनांक २५ .०२.२०१८ दिन रविवार को आर्ष गुरूकुल एटा के परिसर में प्रातः १०.३० बजे निश्चित की गई है।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
प्रधान सम्पादक

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव मनाया गया

आर्य समाज टाउन हाल शाहजहांपुर

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जन्मदिवस एवं बोध पर्व दिनांक १० फरवरी से १३ फरवरी तक आर्य समाज टाउन हाल शाहजहापुर में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मानाया गया पं० रामबहादुर शास्त्री तथा आचार्य चंदन मित्र जी द्वारा उपदेश ने बोध उत्सव के महत्व पर प्रकाश डाला तथा रामबहादुर जी ने यज्ञ के महत्व पर प्रकाश डाला कार्यक्रम में सभी पदाधिकारीगण उपस्थित रहे। श्री ओम प्रकाश जी, श्री प्रेमचन्द्र आर्य, कृष्ण कुमार आर्य श्री राजेश कुमार आर्य, श्री सत्येन्द्र शास्त्री, श्रीमती मीना गुप्ता, सत्यभामा जी, सविता जी, सहदेव जी, आदि महानुभाव उपस्थित रहे।

आर्य समाज तिलहर

आर्य समाज तिलहर शाहजहाँपुर एक दिवसीय महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में आचार्य चन्दन मित्र जी का उपदेश प्रभावशाली रहा। भजनोपदेशक श्री विजय पाल जी ने सभी आर्यजनों को आर्य संस्कृति की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डी.एम. महोदय ने आर्य समाज के कार्यों की प्रसंसा की। समाज के सभी पदाधिकारीगण श्री लोकेश जी, श्री दासीराम जी, श्री शिवराम जी, ठाकुर कृपाल सिंह जी, जितेन्द्र कुमार आर्य अभिवन आर्य सौम्या आर्य आदि महानुभाव उपस्थित रहे।

महर्षि दयानन्द जयन्ती एवं बोध पर्व पर

वैदिक प्रचार समिति का एक दिवसीय वृहद अधिवेशन

दिनांक १४ फरवरी को सम्पन्न हुआ यह कार्यक्रम जिसमें उत्तराखण्ड उत्तरप्रदेश आर्य महासम्मेलन का आयोजन निश्चित हुआ था। लेकिन किन्ही कारणवश यह समय मार्च के अन्तिम सप्ताह में बढ़ाया गया है अब यह कार्यक्रम मार्च में होगा जिसकी सूचना जल्द ही आर्यमित्र में दे दी जायेगी चूंकि प्रतिवर्ष यह उत्सव बोधपर्व मनाया जाता है इसलिए उसको ध्यान में रखकर एक दिवस कार्यक्रम किया गया जिसमें सार्वदेशिक सभा दिल्ली से स्वामी सौम्यानन्द जी एवं वानप्रस्थी सम्मानमुनि जी (अमरोहा) के द्वारा यज्ञ सम्पन्न किया गया।

इस अवसर पर कार्यक्रम में डॉ० डोरी लाल जी वर्मा, श्री आशोक गुप्ता जी, चौ० सुधीर पाल सिंह जी, श्री सोहन लाल शर्मा, चौ० सुदेश पाल सिंह जी, श्री हरिप्रसाद राणा जी, प्रेम गुप्ता जी, शोभनाथ मौर्या, राजेश मौर्या, सहाबुद्दीन अंसारी, श्री ओमप्रकाश जी, प्रकाश राणा जी, जसराज राणा जी आदि महानुभाव उपस्थित रहे कार्यक्रम के संयोजक हरीश कुमार शास्त्री ने सभी का धन्यवाद किया और कहा कि शीघ्र ही कार्यक्रम की सूचना सभी आर्यजनों को समय निश्चित कर दे दी जायेगी।

पृष्ठ ५ का शेष

"मूर्तिपूजा पर ऋषि दयानन्द का अकेले....

मूर्तिपूजा का आरम्भ जैन मत से हुआ। सत्यार्थप्रकाश में वह लिखते हैं कि जैनियों ने मूर्तिपूजा अपनी मूर्खता से चालाई। जैनियों की ओर से वह एक कल्पित प्रश्न प्रस्तुत करते हैं कि शान्त ध्यानावस्थित बैठी हुई मूर्ति देख के अपने जीव व आत्मा का भी शुभ परिणाम वैसा ही होता है। इसका उत्तर देते हुए स्वामी दयानन्द जी कहते हैं कि आत्मा व जीव चेतन और मूर्ति जड़ गुण वाली है। क्या मूर्ति की पूजा करने से जीवात्मा भी अपने ज्ञान आदि गुणों से क्षीण व शून्य होकर जड़ जो जायेगा? स्वामी जी कहते हैं कि मूर्तिपूजा केवल पाखण्ड मत है तथा मूर्तिपूजा जैनियों ने चलाई है। स्वामी दयानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश में चौदह समुल्लास लिखे हैं। बारहवां समुल्लास जैन मत की मान्यताओं की समीक्षा पर लिखा है। उस समुल्लास में भी स्वामी ने जैन मत की मूर्तिपूजा विषयक मान्यताओं का सप्रमाण खण्डन किया है।

मूर्तिपूजा का खण्डन करते हुए स्वामीजी अनेक प्रबल तर्क देते हैं। वह कहते हैं कि जब परमेश्वर निराकार, सर्वव्यापक है तब उसकी मूर्ति ही नहीं बन सकती और जो मूर्ति के दर्शनमात्र से परमेश्वर का स्मरण होवे तो परमेश्वर के बनाये पृथिवी, जल, वायु और वनस्पति आदि अनेक पदार्थ, जिन में ईश्वर के अद्भूत रचना की है, क्या ऐसी रचनायुक्त पृथिवी, पहाड़ आदि परमेश्वर रचित महामूर्तियां कि जिन पहाड़ आदि से वे मनुष्यकृत मूर्तियां बनती हैं, उनको देख कर परमेश्वर का स्मरण नहीं हो सकता? जो मूर्तिपूजक कहते हैं कि मूर्ति के देखने से परमेश्वर का स्मरण होता है, उनका यह कथन सर्वथा मिथ्या है, इसलिए कि जब वह मूर्ति उनके सामने न होगी तो परमेश्वर के स्मरण न होने से वह मनुष्य एकान्त पाकर चोरी, जारी आदि कुकर्म करने में प्रवृत्त भी हो सकते हैं। वह क्योंकि जानते हैं कि इस समय यहां उन्हें कोई नहीं देखता। इसलिए वह मूर्तिपूजक अनर्थ करे बिना नहीं चूकता। इत्यादि। ऐसे अनेक दोष पाषाणादि मूर्तिपूजा करने से सिद्ध होते हैं।

यह भी बता दें कि काशी शास्त्रार्थ से पूर्व वहां के शीर्ष विद्वान पण्डितों ने अपने शिष्य व विद्वानों को स्वामी दयानन्द जी की विद्या की परीक्षा वा जानकारी लेने के लिए गुप्त रूप से उनके पास भेजा था। यह विद्वान थे रामशास्त्री, दामोदर शास्त्री, बालशास्त्री और पं० राजाराम शास्त्री आदि। यह विद्वान स्वामी जी के पास उनका शास्त्रीय ज्ञान का स्तर जानने के लिए आये थे। काशी के पण्डित अपने पक्ष की निर्बलता को जानते थे। इसलिए वह राजा ईश्वरीप्रसाद नारायण सिंह के कहने पर भी शास्त्रार्थ के लिए उत्साहित नहीं हो रहे थे। इस कारण राजा ने उन्हें प्रत्यक्ष रूप से स्वामी दयानन्द जी से शास्त्रार्थ करने के निर्देश व आज्ञा दी थी।

राजा जी ने मूर्तिपूजा से उन्हें प्राप्त होने वाली सुख सुविधाओं व धन वैभव का भी हवाला भी दियां था। यह भी ज्ञातव्य है कि स्वामी जी के वेद प्रचार व मूर्तिपूजा के खण्डन से काशी के लोग बड़ी संख्या में प्रभावित हो रहे थे और मूर्तिपूजा करना छोड़ रहे थे। इसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी काशी नरेश व पण्डितों पर पड़ रहा था परन्तु मूर्तिपूजा के पक्ष में शास्त्रीय प्रमाण न होने के कारण वह किर्तव्यविमूढ़ बने हुए थे। काशी के प्रमुख पण्डित पं० बालशास्त्री आदि को स्वामी जी के निकट भेजकर स्वामी जी द्वारा मान्य प्रमाणिक गन्थों की सूची लाने के लिए भेजा था। बाद में काशी नरेश ने अनुरोध किया और पुलिस कोतवाल पं० रघुनाथ प्रसाद ने मध्यस्थता की तो स्वामी जी ने अपने द्वारा मान्य प्रामाणिक गन्थों की सूची स्वहस्ताक्षर सहित उन्हें दे दी। उनके द्वारा उस समय जो २१ शास्त्र प्रमाण कोटि में स्वीकार किये गये वे थे चार वेद संहिताएं, चार उपवेद, वेदों के ६ अंग, ६ उपांग तथा प्रक्षिप्त श्लोकों को छोड़कर मनुस्मृति।

शास्त्रार्थ के दिन स्वामी दयानन्द जी के एक भक्त पं० बलदेव प्रसाद शुक्ल ने स्वामी जी से कहा कि महाराज, यह काशी नगरी गुणों का घर है। यदि यह शास्त्रार्थ फर्रूखाबाद में होता तो वहां आपके दस बीस भक्त और अनुयायी सामने आते परन्तु यहां काशी में आपको शत्रुओं के शिविर में जाकर रण कौशल दिखाना होगा।

दृढ़ व अपूर्व ईश्वर विश्वासी स्वामी दयानन्द का पं० बलदेव जी को उत्तर था, बलदेव डर क्या है? एक ईश्वर है, एक मैं हूँ, एक धर्म है, और कौन है? सत्य का सूर्य प्रबल अज्ञान और अविद्या के अंधकार पर अकेला ही विजयी होता है। अपने अटल ईश्वरविश्वास के बल पर ही दयानन्द जी ने जड़ उपासना के प्रतीक दृढ़ दुर्ग काशी को अकेले ही भेदने का निश्चय किया था। शास्त्रार्थ के दिन स्वामी जी ने क्षौर कर्म कराया था, उसके बाद स्नान किया, शरीर पर मृत्तिका धारण की, इसके बाद पद्मासन लगाकर देर तक परमेश्वर का ध्यान किया। इसके बाद उन्होंने भोजन किया भोजन के बाद वह शास्त्राथ स्थल आनन्दबाग में शास्त्रार्थ आरम्भ होने के समय ४ बजे से पूर्व पहुँच गये थे।

काशी के पण्डितों ने वेदों से मूर्तिपूजा का कोई प्रमाण न देकर स्वामी जी विषयान्तर करने का प्रयत्न किया। स्वामी जी के सभी प्रश्नों, धर्म व अधर्म मनुस्मृति के अनुरूप लक्षण वा उत्तर भी वह न बता पाये। शास्त्रार्थ चल ही रहा था कि पं० विशुद्धानन्द शास्त्री जी ने अपनी विजय घोषित कर दी, और शास्त्रार्थ स्थल से अपने अनुयायियों की भीड़ के साथ ढोल बाजे बजाते हुए चले गये, पराजय में भी उत्सव मनाना हमारे पौराणिक विद्वानों को आता है। आज काशी शास्त्रार्थ में हमने यह विचार प्रस्तुत किये हैं। हम आशा करते हैं पाठक इसे पसन्द करेंगे। ओ३म् शम्।

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्स: ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
....
....

महर्षि स्वामी दयानन्द जन्म दिवस एवं बोध पर्व की झलकियां

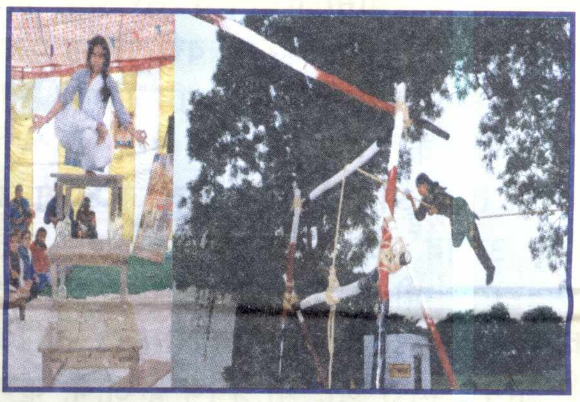

महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मदिवस पर १०८वां वार्षिक महोत्सव कन्या गुरुकुल हाथरस (अलीगढ)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मदिवस पर १०८वां वार्षिक महोत्सव कन्या गुरुकुल हाथरस (अलीगढ)

आर्य समाज स्टेशन रोड़ मुरादाबाद महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव की झलकियां

वैदिक प्रचार समिति भगचुरी खटीमा उधम सिंह नगर (उ०ख०) में महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव की झलकियां

आर्य समाज तिलहर में महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव की झलकियां

आर्य समाज शाहजहांपुर ऋषि दयानन्द जन्मोत्सव की झलकियां

आर्य वीर दल स्थापना दिवस पर ध्वजा रोहरण करते हुए आचार्य देवव्रत जी तथा आर्य वीर दल व्यायाम प्रदर्शन करते हुए (पलड़ी बागपत)

गुरुकुल आश्रम आमसेना (उड़ीसा) की स्वर्णजयन्ती के अवसर पर 'अध्यात्म पथ' के यशस्वी सम्पादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी की "शोभायात्रा के गीत" नामक पुस्तक का लोकार्पण पतंजलि विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य बालकृष्ण जी के कर कमलों से सम्पन्न हुआ।

अनिवार्य सूचना एवं निमंत्रण पत्र

प्रदेश की समस्त जिला आर्य प्रतिनिधि सभाओं के पदेन अध्यक्ष, मंत्री, कोषाध्यक्ष एवं जिला अधिष्ठाता– आर्यवीर दल तथा जिला निरीक्षक–जिला मीडिया प्रभारी एवं मण्डल स्तर तथा प्रदेश स्तर के समस्त अधिकारियों, अन्तरंग व सहयुक्त सदस्यों की एक अनिवार्य बैठक ०४ व ०५ मार्च २०१८ दिन रविवार व सोमवार को प्रातः ११ बजे से आर्य समाज मन्दिर हरिद्वार में आहूत की गई है। जिसमें आर्य समाज के संगठन को सुदृढ़ करने एवं जिले की प्रत्येक समाज का भौतिक सत्यापन करके कम्प्यूटरीकृत करने पर विचार किया जायेगा। प्रदेश के सभी जिलों में वेद प्रचार को कैसे सफलता प्राप्त हो सकती है अपने–अपने स्तर के सुझाव एवं उत्तरदायित्वों पर भी चिन्तन किया जायेगा।

आशा है आप सभी समय पर पहुँच कर अपनी उपस्थिति से बैठक की गरिमा बढ़ायेंगे। आर्य समाज हरिद्वार हरकीपैड़ी के निकट श्रवणनाथ नगर, हरिद्वार में स्थित हैं।

संयोजक– वीरेन्द्र पवार, संयोजक आर्य समाज हरिद्वार, सम्पर्क सूत्र – ०८७५५०२४३१५

डा० धीरज सिंह	स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती	अरविन्द कुमार
कार्यवाहक प्रधान–9412744341	सभा मंत्री–9837402192	सभा कोषाध्यक्ष–9412212344

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक – मुद्रक –प्रकाशक –श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है– सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।